

Code: A-H337121-M

I Semester Exam – 2022-23

7 x 490

Std.: XII

Sub: HINDI

Marks: 80

Date: 18/11/2022

Roll No.: _____

Time: 3 Hrs.

* कृतिपत्रिका के लिए सूचनाएँ :

- १) सूचना के अनुसार गद्य, पद्य, विशेष अध्ययन तथा व्यावहारिक हिंदी की कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।
- २) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही उपयोग करें।
- ३) सभी आकृतियों में उत्तर पेन से ही लिखना आवश्यक है।
- ४) व्याकरण विभाग में पूछी गई कृतियों के उत्तरों के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।

विभाग - १ गद्य

कृति १अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

प्रभात का समय था, आसमान से बरसती हुई प्रकाश की किरणें संसार पर नवीन जीवन की वर्षा कर रही थीं। बारह घंटों के लगातार संग्राम के बाद प्रकाश ने अँधेरे पर विजय पाई थी। इस खुशी में फूल झूम रहे थे, पक्षी मीठे गीत गा रहे थे, पेड़ों की शाखाएँ खेलती थीं और पत्ते तालियाँ बजाते थे। चारों तरफ खुशियाँ झूमती थीं। चारों तरफ गीत गूँजते थे। इतने में साधुओं की एक मंडली शहर के अंदर दाखिल हुई। उनका खयाल था- मन बड़ा चंचल है। अगर इसे काम न हो, तो इधर-उधर भटकने लगता है और अपने स्वामी को विनाश की खाई में गिराकर नष्ट कर डालता है। इसे भक्ति की जंजीरों से जकड़ देना चाहिए। साधु गाते थे-

सुमर-सुमर भगवान को,

मूरख मत खाली छोड़ इस मन को।

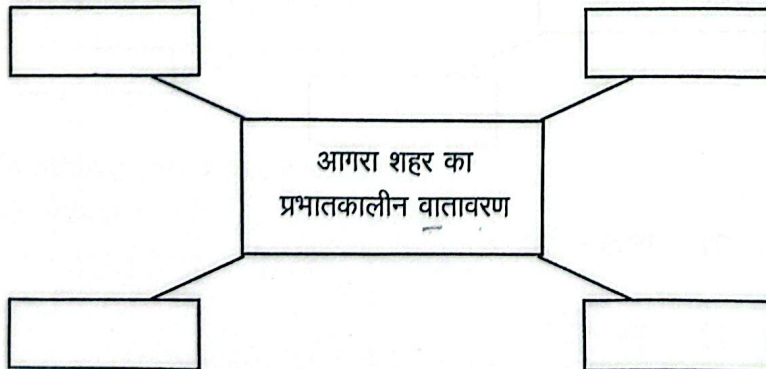
जब संसार को त्याग चुके थे, उन्हें सुर-ताल की क्या परवाह थी। कोई ऊँचे स्वर में गाता था, कोई मुँह में गुनगुनाता था। और लोग क्या कहते हैं, इन्हें इसकी जरा भी चिंता न थी। ये अपने राग में मगन थे कि सिपाहियों ने आकर घेर लिया और हथकड़ियाँ लगाकर अकबर बादशाह के दरबार को ले चले।

यह वह समय था जब भारत में अकबर की तूती बोलती थी और उसके मशहूर रागी तानसेन ने यह कानून बनवा दिया था कि जो आदमी रागविद्या में उसकी बराबरी न कर सके, वह आगरे की सीमा में गीत न गाए और जो गाए, उसे मौत की सजा दी जाए। बेचारे बनवासी साधुओं को पता नहीं था परंतु अज्ञान भी अपराध है। मुकदमा दरबार में पेश हुआ। तानसेन ने रागविद्या के कुछ प्रश्न किए। साधु उत्तर में मुँह ताकने लगे। अकबर के होंठ हिले और सभी साधु तानसेन की दया पर छोड़ दिए गए।

दया निर्बल थी, वह इतना भार सहन न कर सकी। मृत्युदंड की आज्ञा हुई। केवल एक दस वर्ष का बच्चा छोड़ा गया - बच्चा है, इसका दोष नहीं। यदि है भी तो क्षमा के योग्य है।

१) संजाल पूर्ण कीजिए।

2



(पिछे देखो)

२) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानिए।

2

- १) संसार - २) स्वर -
३) दया - ४) प्रकाश -

३) स्वमतः -

2

‘सच्चा कलाकार वह होता है जो दूसरों की कला का सम्मान करता है’ इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

ऊपर की घटना को बारह बरस बीत गए। जगत में बहुत-से परिवर्तन हो गए। कई बस्तियाँ उजड़ गईं। कई वन बस गए। बूढ़े मर गए। जो जवान थे; उनके बाल सफेद हो गए।

अब बैजू बावरा जवान था और रागविद्या में दिन-ब-दिन आगे बढ़ रहा था। उसके स्वर में जादू था और तान में एक आश्चर्यमयी मोहिनी थी। गाता था तो पत्थर तक पिघल जाते थे और पशु-पंछी तक मुग्ध हो जाते थे। लोग सुनते थे और झूमते थे तथा वाह-वाह करते थे। हवा रुक जाती थी। एक समौं बँध जाता था।

एक दिन हरिदास ने हँसकर कहा - “वत्स! मेरे पास जो कुछ था, वह मैंने तुझे दे डाला। अब तू पूर्ण गंधर्व हो गया है। अब मेरे पास और कुछ नहीं, जो तुझे दूँ।”

बैजू हाथ बाँधकर खड़ा हो गया। कृतज्ञता का भाव आँसुओं के रूप में बह निकला। चरणों पर सिर रखकर बोला - “महाराज! आपका उपकार जन्म भर सिर से न उतरेगा।”

हरिदास सिर हिलाकर बोले - “यह नहीं बेटा! कुछ और कहो। मैं तुम्हारे मुँह से कुछ और सुनना चाहता हूँ।”

बैजू - “आज्ञा कीजिए।”

हरिदास - “तुम पहले प्रतिज्ञा करो।”

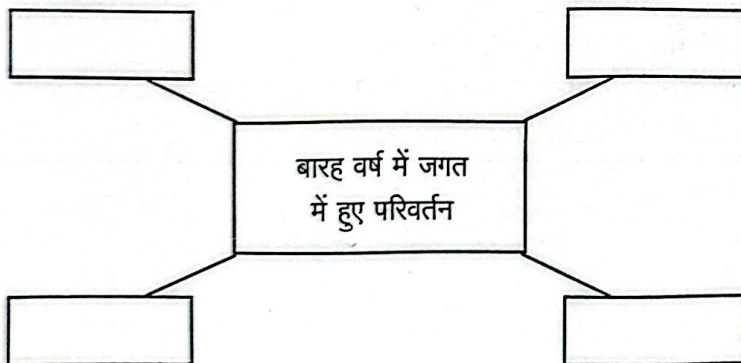
बैजू ने बिना सोच-विचार किए कह दिया - “मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि.....”

हरिदास ने वाक्य को पूरा किया - “इस रागविद्या से किसी को हानि न पहुँचाऊँगा।”

बैजू का लहू सूख गया। उसके पैर लड़खड़ाने लगे। सफलता के बाग परे भागते हुए दिखाई दिए। बारह वर्ष की तपस्या पर एक क्षण में पानी फिर गया। प्रतिहिंसा की छुरी हाथ आई तो गुरु ने प्रतिज्ञा लेकर कुंद कर दी। बैजू ने होंठ काटे, दाँत पीसे और रक्त का घूँट पीकर रह गया। मगर गुरु के सामने उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। गुरु गुरु था, शिष्य शिष्य था। शिष्य गुरु से विवाद नहीं करता।

१) संजाल पूर्ण कीजिए।

2



२) i) वचन परिवर्तन कीजिए।

1

- १) चरणों - २) बस्ती -

ii) लिंग परिवर्तन कीजिए।

1

- १) शिष्य - २) गुरु -

३) स्वमतः -

2

‘बिनु गुरु होय न ज्ञान’ - इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

- इ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग ८० से १०० शब्दों में लिखिए। (कोई दो) 6
- १) 'आदर्श बदला' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
 - २) "बैजू बावरा संगीत का सच्चा पूजारी है" इस विचार को स्पष्ट कीजिए।
 - ३) 'कृतज्ञता मनुष्य का उत्तम गुण है' इस कथन को 'आदर्श बदला' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
- ई) निम्नलिखित प्रश्नों का एक-एक वाक्यों में उत्तर लिखिए। (कोई दो) 2
- १) सुदर्शन जी का मूल नाम लिखिए।
 - २) सुदर्शन ने इस लेखक की लेखन परंपरा को आगे बढ़ाया है।
 - ३) सुदर्शन जी की साहित्यिक रचनाओं के नाम लिखिए।

विभाग - २ पद्य

कृति २अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

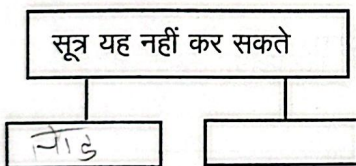
सूत्र यह तोड़ नहीं सकते हैं,
तोड़कर जोड़ नहीं सकते हैं।
व्योम में जाएँ, कहीं भी उड़ जाएँ,
भूमि को छोड़ नहीं सकते हैं।

सत्य है, राह में अँधेरा है,
रोक देने के लिए घेरा है।
काम भी और तुम करोगे क्या,
बढ़े चलो, सामने अँधेरा है।

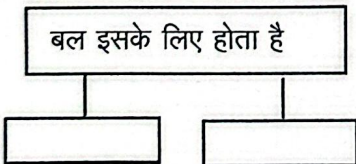
बल नहीं होता सताने के लिए,
वह है पीड़ित को बचाने के लिए।
बल मिला है तो बल बनो सबके,
उठ पड़ो न्याय दिलाने के लिए।

१) कृति पूर्ण कीजिए।

i)



ii)



२) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। 2

- १) विश्वास × ३१३ २) अँधेरा × ३१५१
३) सत्य × ३१३ ४) सामने × ३१५१

३) स्वमतः - 2

'धरती से जुड़ा रहकर ही मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है' इस विषय पर अपना मत प्रकट कीजिए।

(पिछे देखो)

आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

सरसुति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात ।
ज्यों खरचै त्यों-त्यों बढ़ै, बिन खरचे घटि जात ॥
नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत ।
जैसे निरमल आरसी, भली बुरी कहि देत ॥
अपनी पहँच बिचारि कै, करतब करिए दौर ।
तेते पाँव पसारिए, जेती लाँबी सौर ॥
फेर न हवै हैं कपट सों, जो कीजै ब्योपार ।
जैसे हाँड़ी काठ की, चढ़ै न दूजी बार ॥
ऊँचे बैठे ना लहै, गुन बिन बड़पन कोइ ।
बैठो देवल सिखर पर, वायस गरुड़ न होइ ॥
उद्यम कबहुँ न छोड़िए, पर आसा के मोद ।
गागरि कैसे फोरिए, उनयो देखि पयोद ॥

१) उत्तर लिखिए।

2

- इनके भंडार की अपूरब बात है -
- आँखों की तुलना इससे की गई है -
- पद्यांश में प्रयुक्त पानी रखने के काम आनेवाला मिट्टी का बरतन -
- दूसरे की आशा के भरोसे यह बंद नहीं करना चाहिए। -

२) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए।

2

- १) सरसुति -
- २) अपूरब -
- ३) गुन -
- ४) सिखर -

३) स्वमत : -

2

‘चादर देखकर पैर फैलाना बुद्धिमानी कहलाती है’ - इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

इ) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर ‘गुरुबानी’ कविता का रसास्वादन कीजिए।

- १) रचनाकार का नाम
- २) पसंद की पंक्तियाँ
- ३) पंक्तियाँ पसंद आने का कारण
- ४) कविता की केंद्रीय कल्पना

1

1

2

2

ई) निम्नलिखित प्रश्नों का एक-एक वाक्यों में उत्तर लिखिए। (कोई दो)

2

- १) वृंद जी की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।
- २) चतुष्पदी के लक्षण लिखिए।
- ३) गुरु नानक जी की रचनाओं के नाम लिखिए।

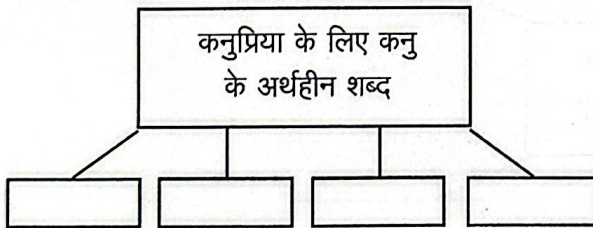
विभाग - ३ विशेष अध्ययन

कृति ३अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

कर्म, स्वधर्म, निर्णय, दायित्व,
शब्द, शब्द, शब्द
मेरे लिए नितांत अर्थहीन हैं-
मैं इन सबके परे अपलक तुम्हें देख रही हूँ
हर शब्द को अँजुरी बनाकर
बूँद-बूँद तुम्हें पी रही हूँ
और तुम्होरा तेज
मेरे जिस्म के एक-एक मूर्च्छित संवेदन को
धधका रहा है
और तुम्हारे जादू भरे होंठों से
रजनीगंधा के फूलों की तरह टप-टप शब्द झर रहे हैं
एक के बाद एक के बाद एक.....
कर्म, स्वधर्म, निर्णय, दायित्व.....
मुझ तक आते-आते सब बदल गए हैं
मुझे सुन पड़ता है केवल
राधन, राधन, राधन,
शब्द, शब्द, शब्द,
तुम्हारे शब्द अगणित हैं कनु-संख्यातीत
पर उनका अर्थ मात्र एक है-
मैं
मैं
केवल मैं !
फिर उन शब्दों से
मुझी को
इतिहास कैसे समझाओगे कनु?

१) संजाल पूर्ण कीजिए।

2



२) पद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।

2

- १) २)
३) ४)

३) स्वमत: -

2

‘व्यक्ति को कर्म प्रधान होना चाहिए’ इस कथन पर अपना मत व्यक्त कीजिए।

आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए।

4

- १) कनुप्रिया की दृष्टि से जीवन की सार्थकता बताइए।
२) ‘कवि ने राधा के माध्यम से आधुनिक मानव की व्यथा को शब्दबद्ध किया है’ इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

(पिछे देखो)

विभाग - ४ (व्यावहारिक हिंदी, अपठित गद्यांश, पारिभाषिक शब्दावली)

कृति ४अ) निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग १०० से १२० शब्दों में लिखिए।

6

- १) "ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होइ" इस पंक्ति का भाव पल्लवन कीजिए।
- २) भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम पर फीचर लेखन कीजिए।

आ) निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर ८० से १०० शब्दों में लिखिए।

4

- १) पल्लवन की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
- २) फीचर लेखन के सोपानों को स्पष्ट कीजिए।

इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

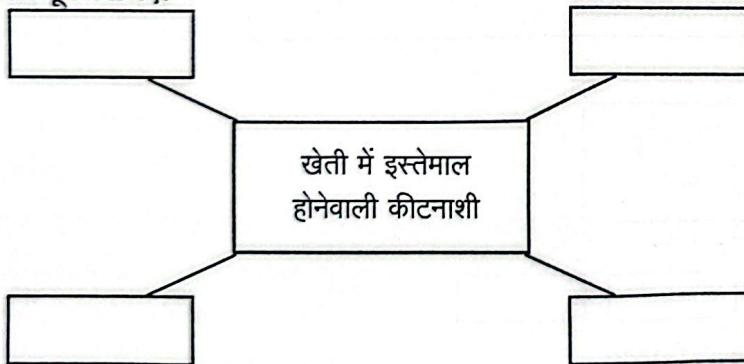
हमें जोखिमों पर अपने निर्णय खतरे की संभाव्य के आधार पर जोखिम-लाभ विश्लेषण की संकल्पना को ध्यान में रखकर लेने होंगे। यह कोई ऐसा मामला नहीं है जिसमें काले को विशुद्ध काला और सफेद को विशुद्ध सफेद बतलाया जा सके अथवा स्पष्ट 'हाँ' या 'ना' कहा जा सके। यह किया कैसे जाए? और क्या यह किया जाना आवश्यक है भी? इस बारे में लोगों की रायों में बहुत अंतर होता है। इसलिए 'ग्राह्य जोखिम' और 'अग्राह्य जोखिम' शब्दों का इस्तेमाल होने लगा है।

खेती में इस्तेमाल होने वाले कीटनाशी मनुष्य के लिए किसी-न-किसी हद तक जहरीले हैं, इन्हें पर्यावरण में जान बुझकर छिड़का जाता है, किंतु इसके लिए इन्हें भली-भाँति परखा जाता है और इस्तेमाल की अनुमति दी जाती है। कारण, इससे फसल की वृद्धि के रूप में अधिक लाभ प्राप्त होता है। रासायनिक कीटनाशियों के इस तरह से नियंत्रित इस्तेमाल के खतरे ग्राह्य जोखिम हैं, लेकिन जोखिम का मूल्यांकन समय अथवा परिस्थितियों के साथ बदल सकता है। विकसित देशों में सन १९७२ के बाद डी. डी. टी. पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, किंतु विकासशील देश डी. डी. टी. के लगातार इस्तेमाल में आज भी लाभ देख रहे हैं।

कुछ रसायन जो अपने आपमें सुरक्षित हैं, उस समय हानि पहुँचाते हैं जब वे अन्य पदार्थों से क्रिया कर लेते हैं या फिर जब वे अन्य पदार्थों के साथ मिलने के बाद अपना जहरीलापन छोड़ देते हैं। सोडियम और क्लोरीन दोनों खतरनाक हैं, किंतु साधारण नमक, सोडियम क्लोराइड जीवन के लिए जरूरी है। दूसरी ओर समुद्र का पानी पीने की दृष्टि से अत्यंत जहरीला है और लंबे समय तक नमक का सेवन रक्तचाप बढ़ने का कारण बन जाता है, जो एक दीर्घकालिक जोखिम है। यहाँ पर, मात्रा और जहरीलापन - दोनों तथ्य जोखिम के अर्थ को प्रभावित करते हैं।

१) संजाल पूर्ण कीजिए।

2



२) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए।

2

- १) खेती - २१..... २) अनुमति - ४३.....
- ३) संकल्पना - २०१..... ४) मूल्यांकन - ४९.....

३) स्वमतः -

2

'कीटनाशकों का प्रयोग' विषय पर अपने विचार लिखिए।

ई) निम्नलिखित में से किन्हीं चार पारिभाषिक शब्दों के लिए हिंदी शब्द लिखिए।

4

- | | |
|-----------------|-----------------|
| १) EXPERT | २) ENROLMENT |
| ३) BOND | ४) AGENDA |
| ५) JUDGE | ६) INVOICE |
| ७) EARNED LEAVE | ८) REGISTRATION |

विभाग - ५ (व्याकरण)

कृति ५अ) निम्नलिखित वाक्यों का कोष्ठक में दी गई सूचनाओं के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए। (किन्हीं दो)

2

- १) एक-एक क्षण आपको भेंट कर देता हूँ। (सामान्य भविष्यकाल में बदलिए)
- २) बैजू का लहू सूख गया है। (सामान्य भूतकाल में बदलिए)
- ३) मन बहुत दुखी हुआ था। (अपूर्ण भूतकाल में बदलिए)

आ) निम्नलिखित पंक्तियों में उद्धृत अलंकारों के नाम पहचानकर लिखिए। (किन्हीं दो)

2

- १) सोहत ओढ़े पीत पट श्याम सलोने गात।
मनों नीलमनि शैल पर, आतप पर्यो प्रभात॥
- २) पीपर पात सरस मन डोला।
- ३) चरण-सरोज पखारन लागा।

इ) निम्नलिखित पंक्तियों में उद्धृत रस पहचानकर उनके नाम लिखिए। (किन्हीं दो)

2

- १) श्रीकृष्ण के वचन सुन, अर्जुन क्रोध से जलने लगे।
सब शोक अपना भूलकर, करतल युगल मलने लगे॥
- २) सुडुक, सुडुक घाव से पिल्लू (मवाद) निकाल रहा है,
नासिका से श्वेत पदार्थ निकाल रहा है।
- ३) माटी कहै कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोहे।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूंगी तोहे॥

ई) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए। (किन्हीं दो)

2

- १) उल्टी गंगा बहाना।
- २) मुट्ठी गर्म करना।
- ३) तिल का ताड़ बनाना।

उ) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए। (किन्हीं दो)

2

- १) परंतु अग्यान भी अपराध है।
- २) कहाँ खो गई है आप।
- ३) एक मैं सफल सूत्र संचालक के रूप में प्रसिद्ध हो गया।
